ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में डॉ. हेडगेवार की भूमिका

Role of Dr. Hedgewar in Indian National Movement

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

आनन्द मोहन द्विवेदी
अतिथि विद्वान,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
शाहनगर, पन्ना,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने आदर्श राष्ट्रवाद एवं कर्मयोग से जो कार्य किया वह संभवतः भारतीय राष्ट्र की भाग्य योजना ही कहा जा सकता है। राष्ट्र के नवसृजन का जो संदेश इन्होंने दिया वह आज भी प्रासंगिक है। इनके जीवन में शिवाजी की वीरता, संकल्प शक्ति एवं राष्ट्रवाद का अटूट प्रभाव था। इन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन करके पारिवारिक जीवन से दूर रहकर राष्ट्रीय सेवा भक्ति का जो व्रत लिया, वह एक महान कार्य ही कहा जा सकता है। बचपन से ही उनके स्कूली जीवन में जो उनकी सकारात्मक सोच एवं संकल्प शक्ति थी, उसके सामने सभी छात्र और शिक्षक नतमस्तक थे। इनके प्रारंभिक जीवन में ही ब्रिटिश सत्ता के प्रति इनके मन में घृणा एवं विद्रोह का भाव था। जब नागपुर के अपने प्राथमिक स्कूल में ही इन्हें वंदे मातरम के गायन के कारण निष्कासित कर दिया गया, तो उन्होंने इसे देशभक्ति का प्रसाद समझकर सहर्ष स्वीकार कर लिया। हेडगेवार ने कहा कि ''अगर मातृभूमि की आराधना करना अपराध है तो मैं यह अपराध के एक बार नहीं अनगिनत बार करूंगा और इसके लिए मिलने वाली सजा को भी सहर्ष स्वीकार कर लूंगा ''। उन्होंने अपनी लगन, ईमानदारी एवं मेहनत से यह प्रमाणित कर दिया कि एक सफल क्रांतिकारी, एक सफल विद्यार्थी और एक सफल राष्ट्रभक्त ही अपनी मातृभूमि की सेवा कर सकता है। प्रस्तुत शोध लेख भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में डॉ. हेडगेवार के योगदान को स्पष्ट करने का एक विनम्र प्रयास है। प्रस्तुत शोध लेख में इस तथ्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है कि डॉ. हेडगेवार के राष्ट्रवाद और उनके जीवंत चरित्र का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में क्या प्रभाव पड़ा।

During the Indian National Movement, Dr. What Keshav Baliram Hedgewar did with ideal nationalism and Karmayog could possibly be called the fate plan of the Indian nation. The message he gave to the nation's innovation is relevant even today. Shivaji's bravery, resolve power and nationalism had an unwavering influence in his life. By observing Brahmacharya and staying away from family life, the fast of national service devotion can be called a great work. All the students and teachers were in front of their positive thinking and determination power in their school life since childhood. In his early life, he had a feeling of hatred and rebellion towards the British power. When he was expelled from his primary school in Nagpur due to singing of Vande Mataram, he accepted it as a prasad of patriotism and was gladly accepted. Hedgewar said that "if worshiping the motherland is a crime, I will do it not once but a lot of times and I will gladly accept the punishment for it". He proved with his dedication, honesty and hard work that only a successful revolutionary, a successful student and a successful patriot can serve his motherland. The research article presented is a humble attempt to explain Dr.Hedgewar's contribution to the Indian national movement. In the research article presented, an attempt has been made to reveal the fact that Dr. What effect did Hedgewar's nationalism and his lively character have in the Indian national movement.

मुख्य शब्द : राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद, स्वराज्य, ब्रह्मचर्य, कर्मयोग, बौद्धिकता, पुनरूत्थान, संस्कृति, सभ्यता, क्रांति, जन– अंदोलन। Nationalism, Imperialism, Swarajya, Brahmacharya, Karmayoga, Intellect, Resurrection, Culture, Civilization, Revolution, Public Movement.

प्रस्तावना

प्रकृति की असीम कृपा से 1 अप्रैल, 1889 को नागपुर में एक यशस्वी बालक का जन्म हुआ, जिसे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के नाम से जाना जाता

है। बचपन से ही ये अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। अपने कृतित्व, व्यक्तित्व, संकल्प– साधना एवं संस्कार तथा चरित्रवान एवं चेतनावान जीवन से राष्ट्रीय आंदोलन में अभूतपूर्व योगदान दिया। डॉ हेडगेवार के क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत कलकत्ता से हुई। जब ये कलकत्ता पहुंचे उस दौरान क्रांतिकारियों के ऊपर अंग्रेजी सरकार के दमन का दौर चल रहा था। सरकार द्वारा राष्ट्रद्रोही सभा अधिनियम 1907, आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम 1908 और इंडियन प्रेस एक्ट 1910 के द्वारा क्रांतिकारी पत्रों, संगठनों एवं व्यक्तियों को गिरफ्तार कर मुकदमा चलाया जा रहा था। कलकत्ता पहुंचते ही हेडगेवार अनुशीलन समिति से जुड़ गए। इस समिति की स्थापना 1902 में की गई थी। पूरे बंगाल में यह सबसे क्रांतिकारी और लोकप्रिय संस्था थी। त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती ने अपनी पुस्तक "थर्टी ईयर्स इन प्रिजन" में लिखा है कि जब हेडगेवार मेडिकल के छात्र थे तब वहां प्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक नलिनी किशोर गुह भी वहां पढ़ रहे थे। इन्होंने ही हेडगेवार, नारायण राव सावरकर एवं अन्य छात्रों को समिति में प्रवेश दिलाया।[1] इस दौरान डॉ हेडगेवार एक सफल क्रांतिकारी के रूप में उभर कर सामने आए।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य यह है कि भारतीय राष्ट्रीय आदोलन में डॉ. हेडगेवार का क्या योगदान रहा। उनके राष्ट्रवाद, कर्मयोग, क्रांतिकारी जीवन और उनके जीवन्त चरित्र का भारतीय राष्ट्रीय आदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा। प्रस्तुत शोध लेख द्वारा यह स्पष्ट करने का एक विनम्र प्रयास है।

संगठित जन–आंदोलन का मार्ग

कुछ समय पश्चात डॉ हेडगेवार ने संगठित जन आंदोलन का मार्ग स्वीकार किया। वे कांग्रेस के सदस्य बने और प्रथम विश्व युद्ध के बाद इसी मंच से कार्य किया। सन 1907 में नीलकंठ राव उद्योजी ने राष्ट्रीय मंडल नामक संस्था की स्थापना की थी। जब डॉ. हेडगेवार कोलकाता से नागपुर आए तब उन्हें राष्ट्रीय मंडल में शामिल कर लिया गया। डी. वी. केलकर के अनुसार वह डॉ हेडगेवार के साथ मंडल के सहायक सदस्य थे।[2] परंतु मंडल की राजनीतिक सोच एवं व्यवहार तथा ब्रिटिश राजसत्ता के साथ नरमी के कारण डॉ. हेडगेवार की असहमति थी और उन्होंने 1919 के मध्य में मंडल के अनेक सदस्यों के साथ नागपुर नेशनल यूनियन नामक अलग संस्था की स्थापना की। जहां मंडल पूर्ण स्वतंत्रता के संबंध में मौन था तो वहां यूनियन का मुख्य उद्देश्य पूर्ण स्वतंत्रता की मांग थी। डॉ हेडगेवार ने कहा था 'यह अत्यंत ही खेदजनक है कि राष्ट्रवादी लोग भारत के हित एवं साम्राज्यवादियों के हितों में अंतर नहीं कर पाए अगर साम्राज्यवादी इतने ही अच्छे हैं तो भारत को गुलाम क्यों बना रखा है। आज की राजनीति में अनेक न्यूनतायें हैं एवं उन न्यूनताओं को दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है'[3]।

डॉ. हेडगेवार कांग्रेस की नागपुर शहर इकाई के संयुक्त सचिव थे। 1920 के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में हेडगेवार के प्रयासों के कारण अरविंद घोष को अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव पास किया गया, किंतु 1910 से ही अपने सन्यासी जीवन के कारण अरविंद घोष ने साफ इंकार कर दिया। प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए अरविंद घोष, विजयराघवाचार्य, चितरंजन दास, मोहम्मद अली एवं क्रांतिकारी श्यामसुंदर चक्रवर्ती का नाम सुझाव के रूप में रखा गया था। हेडगेवार ने विजयराघवाचार्य के नाम का विरोध किया क्योंकि विजयराघवाचार्य जलियांवाला बाग हत्याकांड के दिन मद्रास प्रांत के राज्यपाल के आमंत्रण पर चाय की पार्टी कर रहे थे। हेडगेवार ने प्रश्न किया कि देश की भावनाओं और साम्राज्यवाद के चरित्र को ना समझने वाला व्यक्ति कांग्रेस का अध्यक्ष कैसे हो सकता है?[4]

इसके बाद हेडगेवार कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेताओं में गिने जाने लगे थे। अप्रैल, 1921 में वे मध्य प्रांत के 12 सदस्यों वाले तिलक स्वराज्य फंड के लिए चुने गए थे। मई, 1921 में नागपुर जिला कांग्रेस के लिए चुने गए।[5] धीरे–धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई जो असहयोग आंदोलन में देखने को मिलता है।

असहयोग आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान संपूर्ण मध्य प्रांत में डॉ हेडगेवार के इस दृष्टिकोण की सराहना की जा रही थी। इसी दौरान रोलेट एक्ट आया और जलियांवाला बाग हत्याकांड भी हुआ। इस निर्मम घटना से संपूर्ण देश में आक्रोश की भावना का संचार हो रहा था। इस समय एक संगठित आंदोलन की आवश्यकता थी। जब गांधी जी ने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की तो उस समय मध्य प्रांत में अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही थी, क्योंकि वहां स्वराज्य पार्टी का दबदबा था। स्वराज्य पार्टी के एक प्रमुख नेता वी. जी. खापर्डे ने महात्मा गांधी को एक पत्र के माध्यम से लिखा कि आपके सिद्धांतों को स्वीकार कर असहयोग आंदोलन का समर्थन करने में मैं असमर्थ हूँ, किंतु हेडगेवार ने एम.आर. चोलकर, समीम उल्ला खां एवं अपने अन्य नेताओं के साथ पूरे परिवेश को बदल दिया। संपूर्ण मराठी जिलों में इस आंदोलन को अभूतपूर्व सफलता मिली।

डॉ हेडगेवार ने असहयोग आंदोलन में तन–मन से भाग लिया। अपनी राष्ट्रवादी और साम्राज्यवाद विरोधी दृष्टिकोण के कारण वह किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित नहीं थे। उनका हमेशा से यह मानना था कि हमारा उद्देश्य ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करना है और जो इसमें साथ देगा हम उसके साथ हैं। अपने इसी दृष्टिकोण के कारण उन्हें महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने में और उनका नेतृत्व स्वीकार करने में तनिक भी हिचक नहीं हुई। अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण उन सभी लोगों के प्रति उनके मन में श्रद्धा थी जो साम्राज्यवाद विरोधी कार्य कर रहे थे। वे किसी भी क्रांतिकारी की निंदा करना एकदम पसंद नहीं करते थे। वें उन्हें ईमानदार देशभक्त मानते थे क्योंकि उनका दृष्टिकोण संकीर्ण न होकर काफी व्यापक और विशाल था। वे एक महान स्वतंत्रता वादी थे। उनके जीवन का मूल लक्ष्य ही स्वतंत्रता प्राप्ति था। इस कार्य में लगे लोगों के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी। मराठी मध्य प्रांत की तरफ से डॉ हेडगेवार की अगुवाई में एक असहयोग आंदोलन समिति की स्थापना की गई,

जिसका उद्देश्य कार्यकर्ताओं को असहयोग आंदोलन के लिए बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार करना था। डॉ. हेडगेवार की अपील पर सैकड़ों युवक इस कार्य समिति में भर्ती हुए। नागपुर असहयोग समिति ने 11 नवंबर, 1920 से एक सप्ताह असहयोग सप्ताह के रूप में मनाया।[6]

डॉ हेडगेवार के नेतृत्व में विभिन्न सभाओं का आयोजन किया जाता था, जिसमें हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहते थे। हेडगेवार चाहते थे कि नशाबंदी होनी चाहिए जिसमें शराब को प्रमुखता दी गई। उन्होंने कहा कि नागपुर में एक भी शराब की दुकानें नहीं खुलेंगी। इसके बाद सरकार ने दमन की कार्यवाही और भी तेज कर दी। 31 मार्च, 1921 को 2 माह के लिए सभाओं के आयोजन के लिए डॉ. हेडगेवार के ऊपर प्रतिबंध लगा दिया गया। हेडगेवार के इस कार्य से समाज में एक राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। उनके इस कार्य से उन्हें सभी वर्गों का अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ। संपूर्ण नागपुर में छात्रों ने स्कूलों एवं कॉलेजों का बहिष्कार किया। वकीलों ने न्यायालयों का बहिष्कार किया और यह कार्य तीव्र गति से चलता रहा।

जनवरी, 1921 से मई, 1921 के बीच मध्य प्रांत में 7 लोगों पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया, जिसमें नागपुर से डॉ. हेडगेवार भी थे। डॉ हेडगेवार ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समक्ष एक चुनौती के रूप में थे। उनको दंडित करने के लिए सरकार ने अक्टूबर, 1920 में कटोल एवं भारतवाड़ा की सभाओं में दिए गए उनके भाषणों के आधार पर उन पर आपराधिक दंड संहिता की धारा 108 के अंतर्गत मई, 1921 में उन पर मुकदमा दर्ज किया गया। अपने मुकदमे के दौरान न्यायालय में खड़े होकर उन्होंने खुद अपनी दलील प्रस्तुत की जो उनकी स्वतंत्रता, राष्ट्रभक्ति का एक जीवंत उदाहरण है। इस मुकदमे में उन्हें एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा की घोषणा हुई। डॉ. हेडगेवार की गिरफ्तारी ने संपूर्ण नागपुर में राजनीतिक चेतना का संचार किया। डॉ.हेडगेवार के इस वक्तव्य को पढ़कर ही उनके देषभक्ति के स्तर को समझा जा सकता है– "यह बात जितनी सच है कि किसी को भी कैद किए जाने या कालापानी भेजे जाने, या फॉसी पर लटकाए जाने के लिए तैयार रहना चाहिए, उतनी ही सच यह बात भी है कि किसी को भी लेषमात्र भ्रम नहीं होना चाहिए कि जेल जाना स्वर्ग में प्रवेष करने जैसा है, मानो कैद किए जाने का अर्थ ही स्वतंत्रता प्राप्ति है। किसी को भी निष्चित रूप से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि जेलों को भर देने से हमें स्वतंत्रता या स्वराज्य की प्राप्ति हो जायेगी। सच्चाई यह है कि जेल से बाहर रहकर कोई राष्ट्र की सेवा अनेक प्रकार से कर सकता है"।[7] डॉ. हेडगेवार का यह कथन जनता के नाम सम्बोधन था, जब उन्हें सन् 1921 में एक वर्ष की कैद का आदेष प्राप्त हुआ था। असहयोग आंदोलन और जंगल सत्याग्रह इन दोनो आंदोलनों में डॉ. हेडगेवार को दो बार कुल 19 महीने की जेल हुई।[8] उनका यह जेल का जीवन राष्ट्रवादियों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहा है और इससे राष्ट्रीय आंदोलन को एक व्यापक जन–आंदोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ। 13 अप्रैल, 1922 को जेल के अंदर ही हेडगेवार ने जलियांवाला बाग दिवस मनाया था।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

डॉ. हेडगेवार साम्राज्यवादी आंदोलन के एक कर्मठ सिपाही के रूप में और भारतीय जन मानस में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने के उद्देश्य से 27 सितंबर, 1925 विजयदशमी के दिन एक नए संगठन का श्री गणेश किया, जिसका नामकरण 17 अप्रैल, 1926 को हुआ। इस संगठन के माध्यम से वे संपूर्ण भारत के बुद्धिजीवियों द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को एक अखिल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप प्रदान करना चाहते थे। संघ की स्थापना से पूर्व हेडगेवार विभिन्न राष्ट्रवादियों से मिले, जिनमें विनायक दामोदर सावरकर भी थे। साम्राज्यवादी प्रभाव से हिंदू संस्कृति एवं सभ्यता की पुर्नस्थापना के उद्देश्य से उन्होंने एक नए संगठन की आवश्यकता महसूस की। डॉ. हेडगेवार हिंदू संगठन के एक प्रगतिशील एवं सर्वव्यापी स्वरूप की कल्पना कर रहे थे। अतः समकालीन न्यूनताओं के चक्रव्यू से अलग हटकर उन्होंने नई शुरुआत की जो भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने हिंदू समाज एवं संस्कृति तथा धर्म को सभ्यता के प्रवाह का अंग माना। उन्होंने कहा कि ''संघ का कार्य तथा उसकी विचारधारा हमारा कोई नया अविष्कार नहीं है। हमारा परम पवित्र सनातन हिंदू धर्म, हमारी पुरातन संस्कृति, हमारा स्वयं सिद्ध हिंदू राष्ट्र तथा अनादिकाल से चला आया परम पवित्र भगवा ध्वज यह सभी बातें संघ ने पूर्ववत सबके सामने रखी हैं। उपर्युक्त बातों में नवचैतन्य का संचार करने के लिए परिस्थिति के अनुकूल जो कोई कार्यप्रणाली संघ को आवश्यक प्रतीत होगी उसे संघ अंगीकृत करेगा''।

स्वराज्य का लक्ष्य

प्रारंभ से ही डॉ. हेडगेवार का लक्ष्य स्वाधीनता की प्राप्ति था। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे निरंतर रूप से सक्रिय थे, इसलिए स्वयंसेवकों को शारीरिक प्रशिक्षण के साथ–साथ बौद्धिक प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इसके अलावा देशभक्ति से ओतप्रोत बौद्धिक कार्यक्रमों एवं खेलों का आयोजन किया जाता था। 27–28 अप्रैल, 1929 को वर्धा में स्वयंसेवकों का एक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया था। इसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों से अपील की गई थी कि स्वराज्य प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने के लिए तैयार रहें और यह घोषणा की गई कि संघ का अंतिम लक्ष्य स्वराज्य प्राप्त करना है।

संघ के अपने स्वतंत्र दृष्टिकोण के कारण कांग्रेसी और संघ के बीच खटास आने लगी। कुछ कांग्रेसी नेता संघ पर मनगढ़ंत आरोप लगाने लगे, इसका हेडगेवार को पूर्वाभास था। उन्होंने लिखा कि हमारा अंतिम लक्ष्य स्वराज्य की प्राप्ति करना है। इसी दौरान जब दिसंबर, 1929 में लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का अपना लक्ष्य घोषित किया तो इस घटना पर उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रकट की और उन्हें इसका पूर्वाभास भी था। डॉ हेडगेवार ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सभी साखाएँ रविवार दिनांक 26 जनवरी, 1930 को सायंकाल 6:00 बजे अपने–अपने स्थानों

पर, अपनी–अपनी शाखाओं में सभी स्वयंसेवकों की सभा आयोजित करके राष्ट्रीय ध्वज अथवा भगवा ध्वज का वंदन करें। कांग्रेस के विरोध को उन्होंने संघ कार्यकर्ताओं के मन में नहीं आने दिया। उन्होंने कहा कि हमें एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ स्वाधीनता के मार्ग पर चलना है।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान एक व्यापक दृष्टिकोण, कठोर दृढ़ इच्छाशक्ति और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत उनका जीवन चरित्र अद्वितीय है, उसकी इतिहास में कोई तुलना नहीं है। अंग्रेजों के गुप्तचर विभाग की फाइलों में कोड नाम 'कोकीन' से विख्यात डॉ. हेडगेवार ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना से पूर्व कांग्रेस में पदाधिकारी रहते हुये और उनसे भी पूर्व अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान दिया था। भारत अथवा दुनिया में समाज सर्वोपरि है, इस हेतु संगठनों के सृजन, प्रबंधन और विकास की यात्रा में डॉ. हेडगेवार का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने शाखा नामक तंत्र का जो विचार प्रतिपादित किया वह अपने आप में एक नवीन मॉडल था और सदैव रहेगा। समाज और राष्ट्र सेवा के लिए प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा समर्पित करने का यह साधारण सा विचार ही साधारण लोगों को न केवल एक घण्टा अपितु सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने के लिए प्रेरित करता है। "संघ कुछ नहीं करेगा, स्वयं सेवक सब कुछ करेंगे" उनका यह वाक्य आज भी संघ की कार्यषैली में स्पष्ट दिखता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्याग्रह में भाग लेने हेतु उन्होंने सरसंघचालक पद त्यागकर और संघ की बागडोर अन्य कार्यकर्ताओं को सौंपकर इस सिद्धांत का उदाहरण प्रस्तुत किया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *चक्रवर्ती, त्रैलोक्यनाथ, 'थर्टी ईयर्स इन प्रिजन', अल्फा बीटा पब्लिकेशनस, कोलकाता, 1963, पृ.–277*
2. *केलकर, डी.वी., दी आर एस एस, इकनोमिक वीकली, 4 फरवरी, 1950*
3. *सिन्हा, राकेश, आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2016, पृ. 34*
4. *वही पृ.–37*
5. *वही पृ.–39*
6. *वही पृ.–43*
7. *शारदा रतन, संघ और स्वराज, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पृ.–23*
8. *शारदा रतन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : परत दर पर, ब्लूम्सबरी प्रकाशन, दिल्ली, 2020*